537

॥ श्रीहरिः ॥

बाल-चित्रमय बुद्धलीला

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

बालचित्रमय बुद्धलीला

आजसे लगभग ढाई हजार वर्ष पहले उत्तर भारत (बस्ती जिले) में शाक्यवंशी महाराज शुद्धोदन राज्य करते थे। उनकी राजधानी कपिलवस्तु नगरमें थी।

शाक्यवंश सूर्यवंशमें इक्ष्वाकुवंशकी एक शाखा माना जाता है। इसी इक्ष्वाकुवंशमें मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामका भी अवतार त्रेतायुगमें हुआ है।

महाराज शुद्धोदनके दो रानियाँ थीं। बड़ी रानीका नाम महामाया था और छोटी रानीका नाम प्रजावती था। लेकिन महाराजके कोई संतान नहीं थी।

एक रातको स्वप्नमें रानी महामायाने देखा कि एक छः दाँतोवाला उजला हाथी है और छः नोकवाला एक प्रकाशमय तारा है। वह तारा उनके शरीरमें प्रवेश कर गया है।

महारानी महामाया उसी दिन गर्भवती हो गयीं। वे जब अपने पिताके घर जा रही थीं, तब मार्गमें लुम्बिनी वनमें एक वृक्षकी डाल पकड़कर खड़ी हो गयीं। वहीं उनके बिना किसी कष्टके पुत्रका जन्म हो गया। वह अद्‌भुत बालक उत्पन्न होते ही सात पद चलता गया। जहाँ उसने पैर रखे, वहीं पृथ्वीसे कमलके फूल प्रकट हो गये।

महारानी महामायाका तो कुछ दिनोंमें ही परलोकवास हो गया। उनके कुमार सिद्धार्थका पालन दूसरी रानी प्रजावतीने किया। सिद्धार्थ बचपनमें भी खिलौने छोड़कर ध्यान लगाकर बैठ जाते थे। माता-पिताको बालककी यह दशा देखकर चिन्ता होती थी।

बुद्ध-जननिने स्वप्न निहारा। है प्रबाल द्युति निर्मल तारा॥
छः दाँतोंका हाथी सुन्दर। रँग सफेद उत्तुंग मनोहर॥

वन लुम्बिनि ऊँचा तरु शाल। माता खड़ीं धरे एक डाल॥
जन्मत बुद्ध चले पद सात। प्रति पदपर प्रगटे जलजात॥

नहीं खिलौनोंका कुछ प्यार। ध्यानमग्न सिद्धार्थ कुमार॥
माता-पिता चकित लख हाल। अनुपम ही है उनका लाल॥

कौन चलावे इसपर बाण। हैं सबको प्यारे निज प्राण॥
घूमे सुन्दर मृग बेरोक। लिया कुवँरने घोड़ा रोक॥

ले ली हार, जीत दी छोड़। उतरे भूमि त्याग घुड़दौड़॥
देख हाँफता अश्व उदार। थपकाते करते हैं प्यार॥

गिरा हंस खा करके तीर। हुए देख सिद्धार्थ अधीर॥
लिया गोदमें बहुत सम्हाल। पंख पोंछते बाण-निकाल॥

कुछ बड़े होते ही कुमार सिद्धार्थके अद्‌भुत गुण प्रकट होने लगे। वे आखेट करने जाते तो पास आये मृगपर भी बाण नहीं चलाते थे। मृगको भाग जाने देते थे।

जब घोड़ा दौड़ते-दौड़ते थककर हाँफने लगता तो नीचे उतरकर उसे पोंछते, थपथपाते और प्यार करने लगते।

उनके बगीचेमें एक दिन हंस ऊपरसे गिर पड़ा। उसे बाण मारकर कुमार देवदत्तने गिराया था। सिद्धार्थने हंसका बाण निकाला, उसके घाव धोये और उसे गोदमें ले लिया। देवदत्त जब हंस माँगने आये तो उन्होंने उसे देना अस्वीकार किया। बात राजदरबारमें गयी, किंतु राजसभामें भी निर्णय सिद्धार्थके पक्षमें हुआ; क्योंकि हंसके उन्होंने प्राण बचाये थे। जब हंस उड़ने योग्य हो गया तो उसे उन्होंने उड़ा दिया।

सिद्धार्थकुमार कहीं विरक्त न हो जायँ, इसलिये महाराज शुद्धोदन उनका विवाह कर देना चाहते थे। वे किस राजकुमारीको पसंद करते हैं यह जाननेके लिये अशोकोत्सवकी व्यवस्था हुई। उपवनमें कुमार सिद्धार्थके हाथसे उपहार लेने बारी-बारीसे सब राजकुमारियाँ आयीं। सबसे अन्तमें राजकुमारी गोपा (यशोधरा) आयीं तो उन्हें कुमारने अपने गलेका रत्नहार उतारकर दिया।

यशोधराके विवाहके लिये राजकुमारोंके बल एवं ज्ञानकी परीक्षा होनी थी। परीक्षामें कुमार सिद्धार्थ सबसे श्रेष्ठ निकले। तलवार चलाना, घुड़सवारी आदिमें कोई उनकी बराबरी नहीं कर सका। उन्होंने किसीसे भी न झुकनेवाले, 'सिंह-हनु' से बने धनुषपर डोरी चढ़ाकर लक्ष्यवेध किया।

सब प्रकारसे विजयी सिद्धार्थकुमारके गलेमें राजकन्या यशोधराने जयमाला डाल दी। विधिपूर्वक दोनोंका विवाह हो गया।
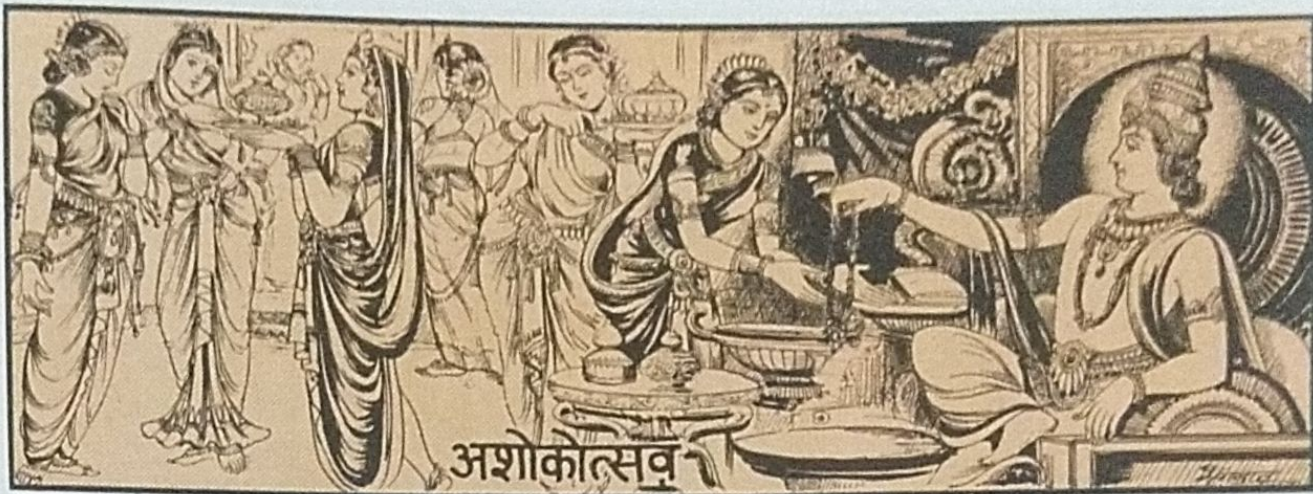
है अशोक उत्सव नृप उपवन। बँटते हैं उपहार रत्न-धन॥
जब आयी गोपा शुचि बाला। दी कुमारने निज मणि-माला॥
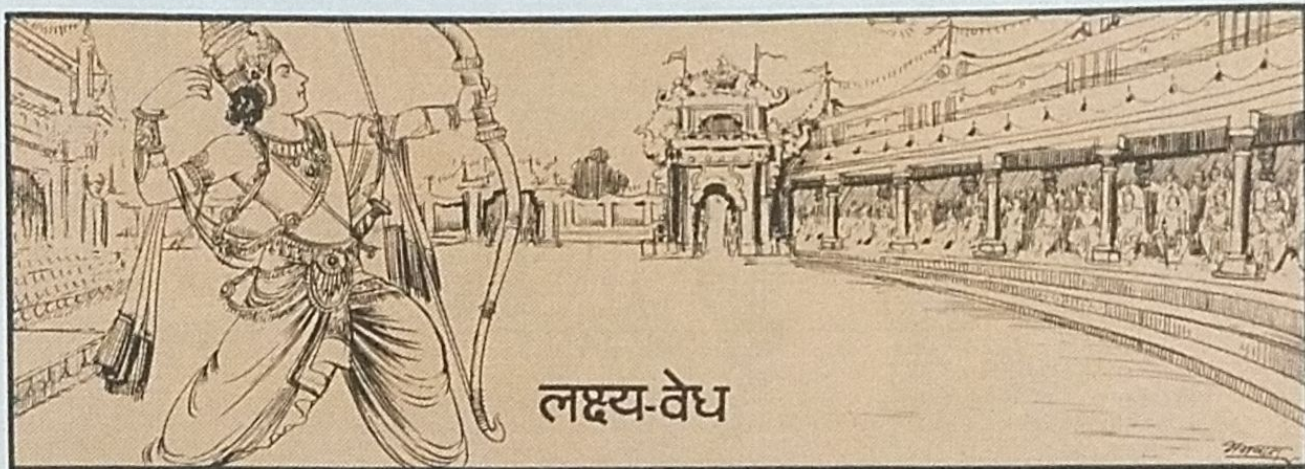
कोई झुका न सकता कोर। सिंह-हनुका वह धनुष कठोर॥
चढ़ा खींच छोड़ा भरपूर। बेध लक्ष्य शर पहुँचा दूर॥

सुप्रबुद्धकी पावन कन्या। है यशोधरा सचमुच धन्या॥
शाक्यसिंह शुद्धोदन-नन्दन। लेते हैं जयमाल मुदित मन॥

झुकी कमर तन जर्जर क्षीण। पके केश मुख शोभाहीन॥
'सब होंगे ऐसे ही वृद्ध?'। व्यर्थ जगतकी सुख-समृद्धि॥

'क्षत-विक्षत तन आँखें लाल। क्यों यह भूमि पड़ा बेहाल?'
'स्वास्थ्यमात्र ही जिसका भोग। लगा इसे है बस, वह रोग॥'
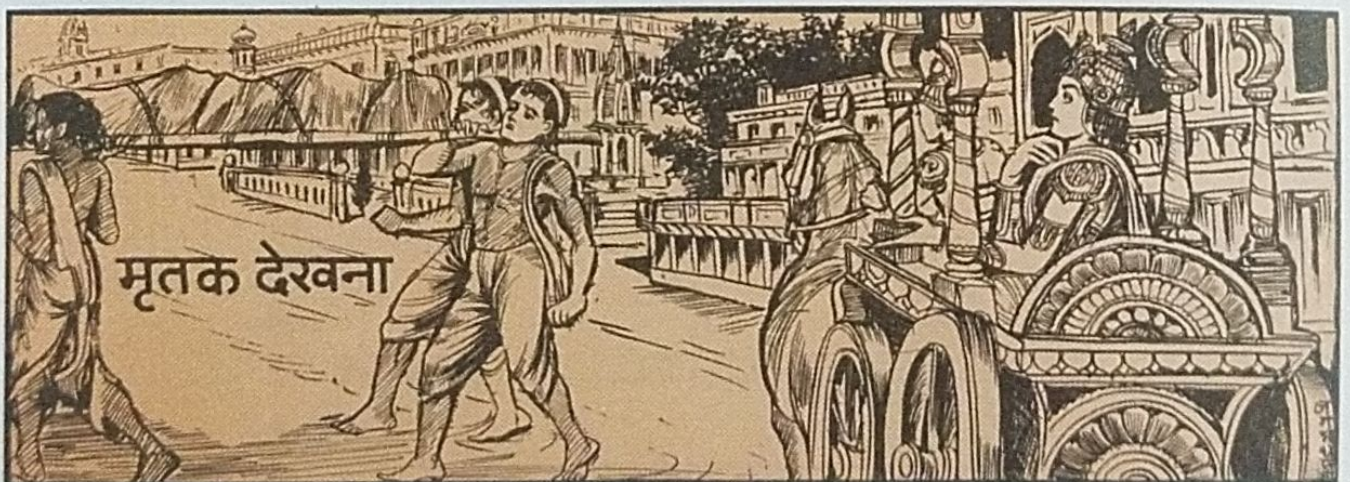
'क्यों रोता जाता समुदाय?'। कौन बँधा जाता निरुपाय?'
'जगमें मृत्यु इसीका नाम। जीवनका यह ध्रुव परिणाम॥'

राजकुमारके जन्मके समय ज्योतिषियोंने कहा था—'ये या तो चक्रवर्ती राजा होंगे या विरक्त ज्ञानी होंगे।' महाराज शुद्धोदनने राजकुमारको एक विशाल भवनमें रहनेकी व्यवस्था कर दी थी। वहाँ कोई वृद्ध, रोगी नहीं जा पाता था। कोई दुःखकी चर्चा वहाँ नहीं की जा सकती थी, जिससे कि कुमारके मनमें वैराग्यका भाव आवे। एक बार कुमारने नगर देखनेकी इच्छा की। महाराजने नगरको खूब सजवा दिया। रथपर चढ़कर कुमार सिद्धार्थ घूमने निकले। संयोगवश उन्हें मार्गमें एक लाठी टेककर चलता बूढ़ा दिखायी पड़ गया।

दूसरी बार मन्त्रीके पुत्रके साथ साधारण सौदागरके वेशमें वे नगर घूमने निकले। इस बार उन्हें घावोंसे भरे शरीरवाला एक रोगी दिखायी पड़ा। कुमारने उस रोगीको सहारा देकर उठाया।

तीसरी बार जब फिर रथमें बैठकर वे नगर देखने निकले तो एक मुर्देको ले जाते हुए लोग उन्हें दिखायी दिये।

बुढ़ापा और रोग सबको मिलते हैं। इनसे सौन्दर्य, बल और शरीरका नाश हो जाता है। सबको एक-न-एक दिन मरना है। ये बातें बूढ़े, रोगी और मृतकको देखकर कुमार समझ गये। संसारके भोगोंसे उन्हें वैराग्य हो गया। अमरत्व कैसे पाया जाय, उन्हें यही धुन लग गयी। एक रात अपनी पत्नी यशोधरा और अपने नवजात पुत्र राहुलको छोड़कर वे घरसे निकल पड़े।

कुमार सिद्धार्थके घोड़ेका नाम कन्थक था। उसपर चढ़कर वे बराबर चलते गये। उनके साथ केवल उनका छन्दक नामका सारथी था। जब वे घोड़ेपर बैठे हुए अनामा नदी पार करने लगे तो छन्दक भी घोड़ेकी पूँछ पकड़कर तैरता हुआ नदी पार चला गया।

नदी पार होकर कुमार सिद्धार्थने तलवारसे अपने लम्बे केश काट डाले। अपने राजसी वस्त्र और आभूषण उतारकर सारथीको दे दिये और घोड़ेके साथ उसे लौट जानेको कह दिया।

'जरा-मृत्युसे जीवन ग्रस्त। होगा जगका वैभव अस्त॥'
गोपा-राहुल सोते छोड़। चले बुद्ध जगसे मुख मोड़॥

पूरी हुई त्याग-तैयारी। अब यह अन्तिम अश्व-सवारी॥
'छन्दक' पूँछ गहे मनमार। 'कंथक' चला 'अनामा'-पार॥
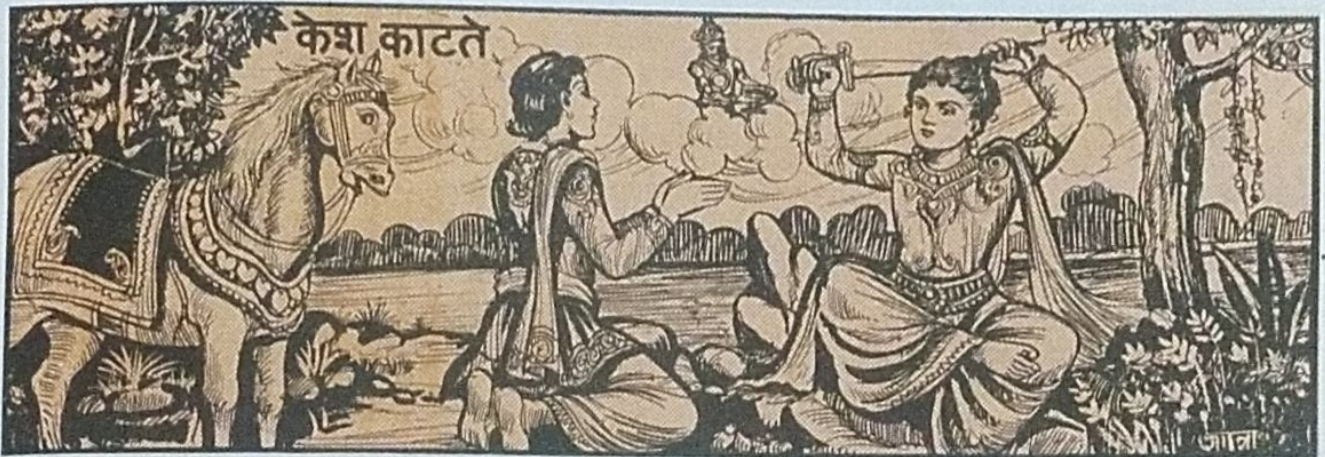
करमें ले कटार खर-धार। काट रहे सिद्धार्थ कुमार॥
अपने काले कोमल केश। त्याग रहे हैं राजस वेश॥
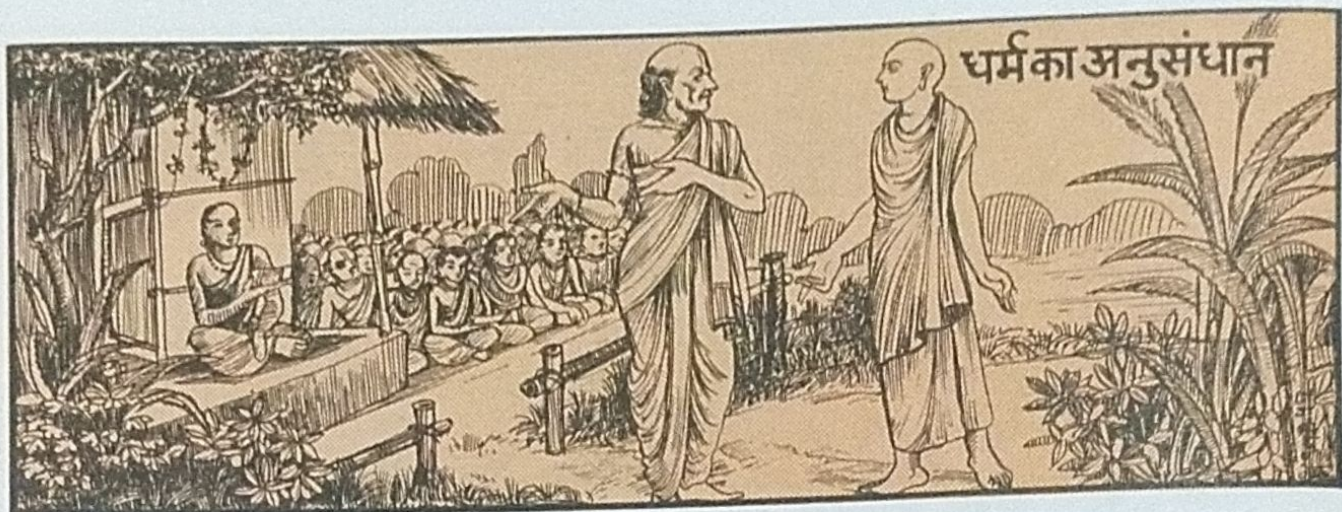
'परम तत्त्व पावें कैसे हम?'। आये रुद्रकजीके आश्रम॥
गौतमका आचार्य सुजान। करते हैं स्वागत-सम्मान॥
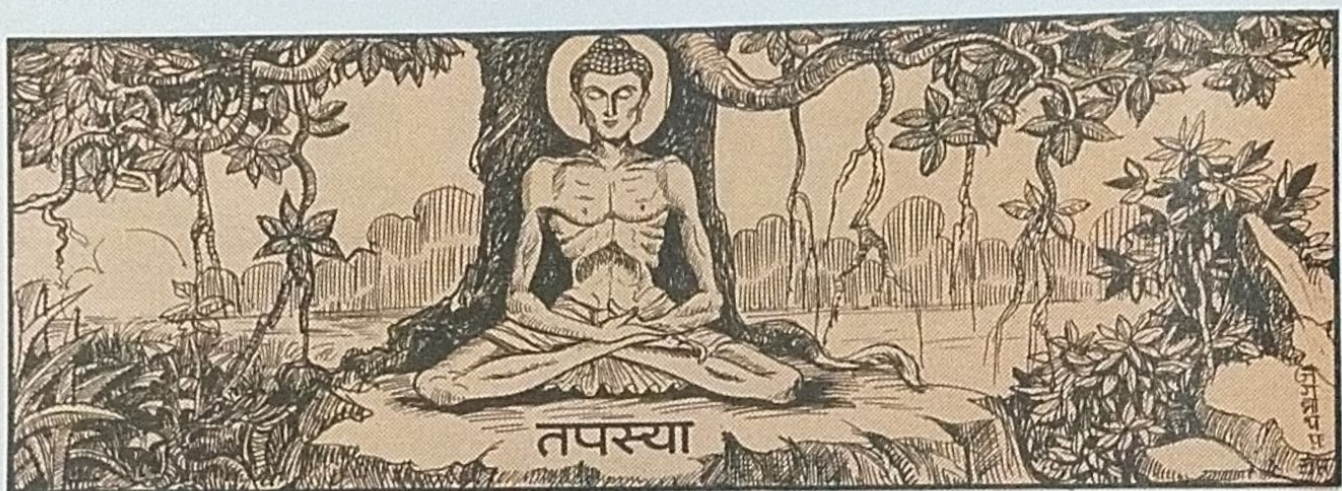
मिला न विद्यामें वह बोध। तपसे निश्चय करना शोध॥
वनमें हुए उग्र तप-लीन। दीख रहा तन जर्जर-क्षीण॥

'छोड़ न ढीले वीणा-तार। खींच न, टूटें कर झंकार॥'
कुछ नारी गातीं यह राग। मिला बुद्धको 'मध्यम मार्ग'॥

सच्चे धर्मकी खोजमें सिद्धार्थकुमार कई विद्वानोंके पास गये। उस समयके जितने प्रख्यात विद्वान् आस-पास थे—सबने अपने यहाँ आनेपर इनका बड़े प्रेमसे स्वागत किया।

कहीं भी सच्चा ज्ञान न मिलते देखकर कुमारने तपस्याका निश्चय किया। पुस्तकीय ज्ञानसे उनको संतोष नहीं हुआ। वनमें एक वृक्षके नीचे आसन लगाकर बिना कुछ खाये-पीये वे ध्यान करने लगे। कठोर तप करनेसे उनका शरीर सूख गया।

एक दिन उस वनमेंसे कुछ गाने-बजानेवाली स्त्रियाँ गाती हुई निकलीं। उनके गीतका भाव यह था—'वीणाके तार इतना मत खींचो कि टूट जाय और इतना ढीला भी मत छोड़ो कि उससे स्वर न निकले।' इस गीतसे बुद्धने शिक्षा ली कि साधनमें युक्ताहार-विहार ठीक है, अत्यन्त कठोर तप ठीक नहीं है। उन्होंने तपस्याका हठ छोड़ दिया। मध्यम मार्ग ग्रहण किया।

वहाँसे चलकर वे एक वटवृक्षके नीचे बैठे थे। सुजाता नामकी एक स्त्रीने वटके देवताकी मनौती की थी कि यदि उसे पुत्र हुआ तो वह विधिपूर्वक बनी खीर चढ़ायेगी। वटके नीचे तपस्वी गौतमको देखकर उसने समझा कि देवता प्रकट हो गये हैं। बड़ी श्रद्धासे उसने खीर भेंट की।

सुजाताकी दी हुई खीरका भोजन करके गौतमने स्वस्तिक नामक ब्राह्मणको कुश लिये जाते देखा। उस ब्राह्मणसे कुश उन्होंने माँगे। बड़े आदरसे ब्राह्मणने कुश दे दिये।

बोधिवृक्षके नीचे कुश बिछाकर गौतम इस निश्चयसे बैठ गये कि अब ज्ञान प्राप्त करके ही उठेंगे। कामनाओंका देवता दुरात्मा 'मार' उनके निश्चयको जानकर अप्सराओं और राक्षसोंके साथ वहाँ आया। वह उन्हें डराने और ललचानेके नाना प्रकारके प्रयत्न करने लगा। लेकिन गौतम अटल रहे। उनके ध्यानमें थोड़ी भी बाधा नहीं पड़ी।
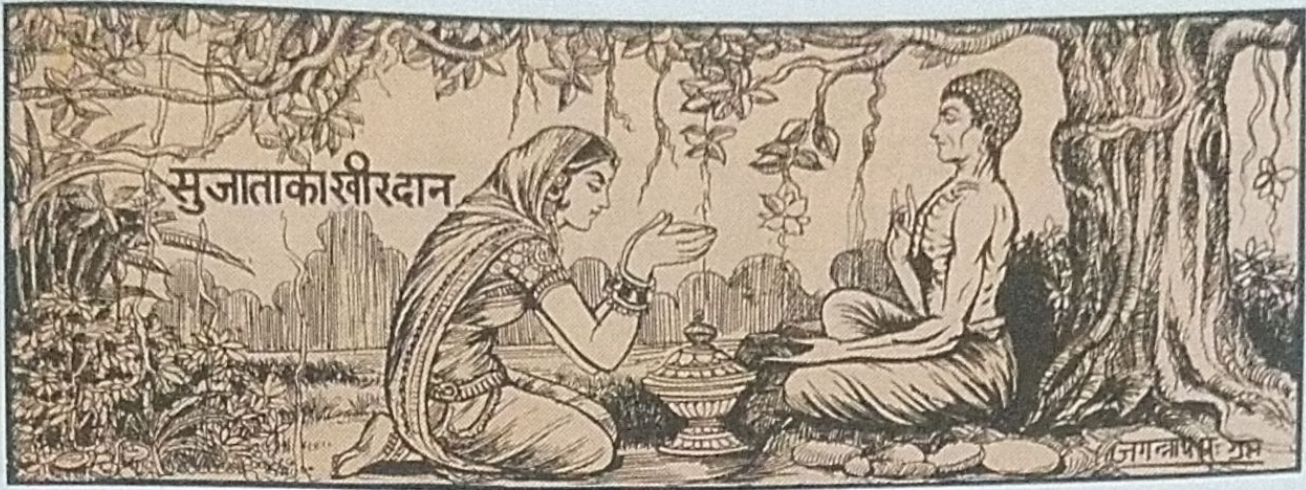
देखा देव सदृश निज आगे। भाग्य सुजाताके थे जागे॥
दिया खीर कर सादर वन्दन। लिया बुद्धने कर अभिनन्दन॥

'कुश दो मुझको विप्र उदार। बैठ इन्हींपर जीतूँ 'मार'॥'
गौतमके सुन वचन प्रवीण। दिया विप्रने मुट्ठी तीन॥
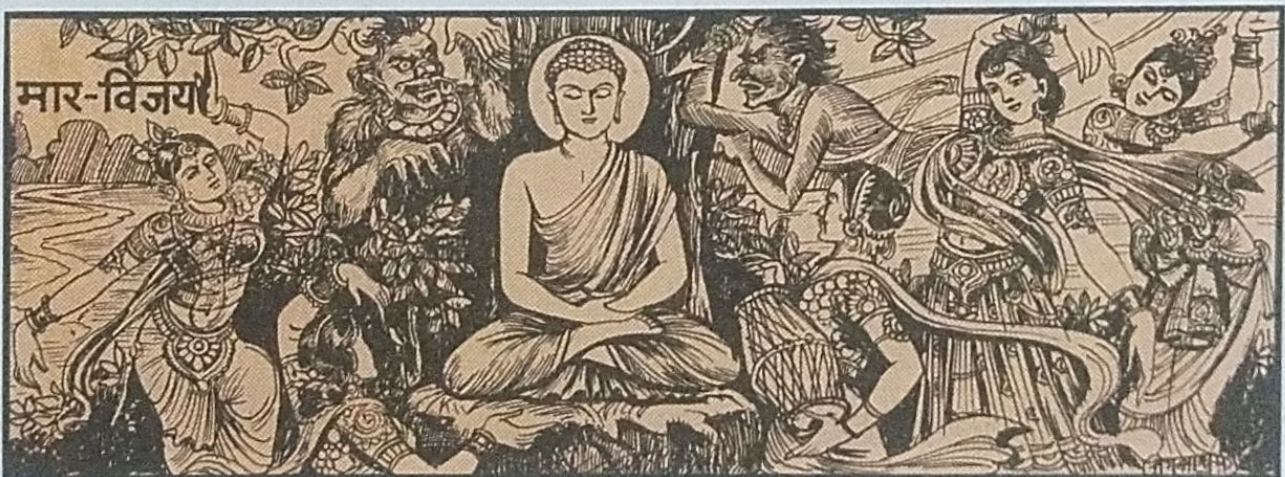
दिव्य नारियोंके सब यत्न। असुरोंके भय-जनक प्रयत्न॥
सब करके थक हारा 'मार'। रहे बुद्ध-अविचल अविकार॥
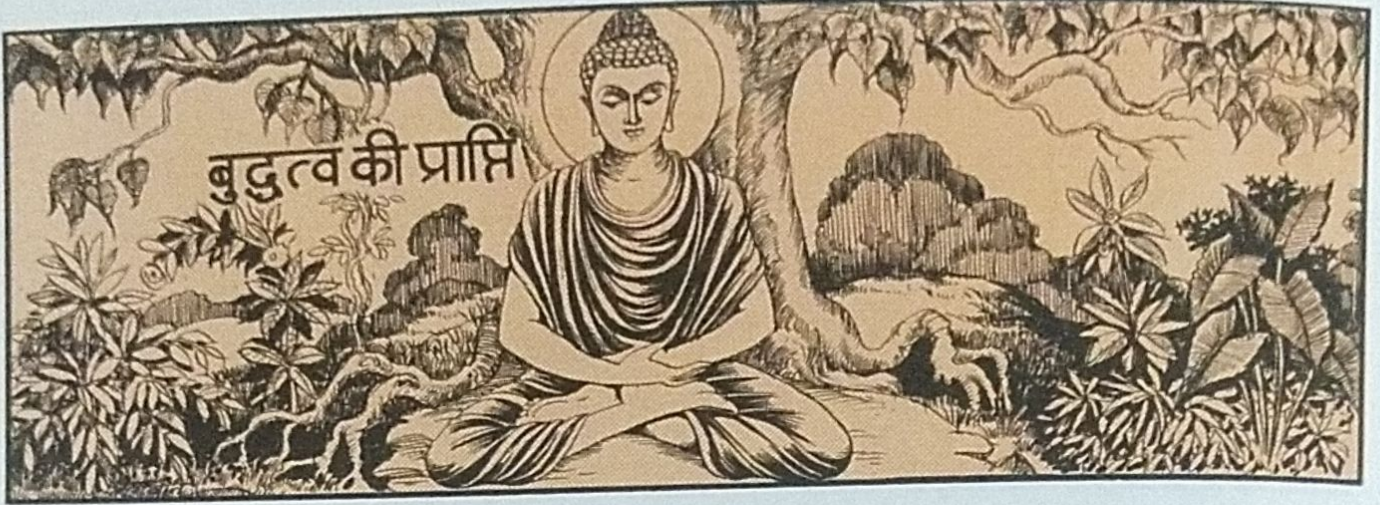
बैठे 'बोधि वृक्ष'के मूल। हुई वासना है निर्मूल॥
अन्तर अमल शान्त सम शुद्ध। हैं ये अब 'सम्यक्-संबुद्ध'॥
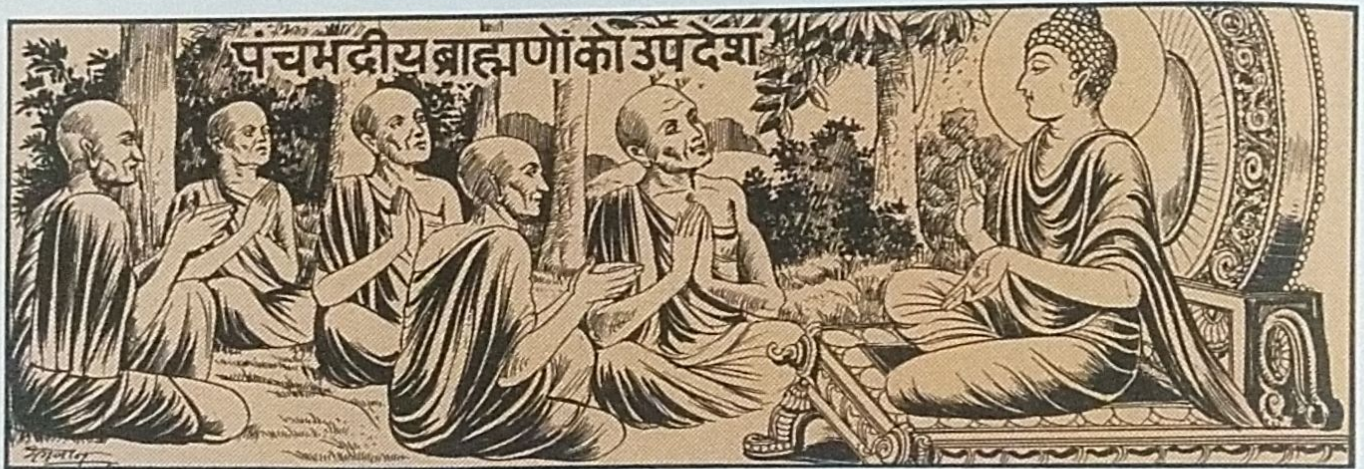
प्रथम तपस्यामें थे सहचर। यही 'पंच भद्रीय' विप्रवर॥
प्रथम 'तथागत'का उपदेश। सुनते ले ये भिक्षु-सुवेश॥

घेरे बैठे भिक्षु सुहृद्तम। आधे लेटे बुद्ध महत्तम॥
'आर्य सत्य' हैं चार बताते। 'आर्य अष्टांगिक' हैं समझाते॥

मारके प्रयत्न व्यर्थ हो गये। वह हारकर अपने समाजके साथ लौट गया। गौतमको ज्ञान प्राप्त हुआ। वे बुद्ध हो गये।

बुद्धत्व प्राप्त करके वे काशी आये। तपस्याके प्रारम्भमें जो पञ्चभद्रीय विप्र उनके साथ थे और उन्हें तपस्यासे अलग होते देखकर निराश होकर काशी चले आये थे, उन्हें बुद्धने ज्ञानका उपदेश किया। वे पञ्चभद्रीय विप्र ही बुद्धके प्रथम कृपापात्र हुए।

धीरे-धीरे उनके अनुगतोंकी संख्या बढ़ने लगी। काशीके पास सारनाथ नामक स्थानमें ही उन्होंने धर्मचक्रका प्रवर्तन आरम्भ किया था। उनकी शिक्षाके मुख्य चार उपदेश हैं, जो चार आर्य-सत्य कहे जाते हैं। १-दुःख क्या है? २-दुःख कैसे उत्पन्न होता है? ३-दुःखोंका मिटना क्या है? ४-दुःख कैसे मिटते हैं? यही चार आर्य-सत्य हैं। साधनरूपमें वे आर्य-अष्टाङ्गिक अर्थात् आठ श्रेष्ठ अङ्गोंवाला मार्ग बताते थे, जो यह है—१-सम्यक् दृष्टि, २-सम्यक् संकल्प, ३-सम्यक् वाचा, ४-सम्यक् कर्मान्त (कर्म), ५-सम्यक् आजीव (जीविका), ६-सम्यक् व्यायाम, ७-सम्यक् स्मृति और ८-सम्यक् समाधि।

बहुत-से लोगोंने बुद्धदेवके उपदेशोंको अपनाया। घूमते-घामते बुद्ध काश्यप ब्राह्मणोंके यहाँ गये। काश्यपोंकी अग्निशालामें एक भयंकर विषधर सर्प रहता था। जब बुद्ध अग्निशालामें बैठ गये तो सर्प निकला और उनपर झपटा। लेकिन बुद्धकी दृष्टि पड़ते ही वह शान्त होकर उनके भिक्षापात्रमें ही बैठ गया।

एक बार गयशीर्ष पर्वतपर दावाग्नि लगी थी। उस जलते पर्वतको दिखाकर बुद्धने शिष्योंको बताया कि 'सारा संसार इसी प्रकार राग-द्वेषादि दुःखोंसे जल रहा है। बुद्धिमान् वही है, जो इस ज्वालासे निकलकर अध्यात्मतत्त्वकी खोज करे।'

गयशीर्ष पर्वतसे चलकर तथागत गौतम राजगृह पहुँचे। उनके आनेका समाचार पाकर महाराज बिम्बसार उनका स्वागत करने रानी, राजकुमार और मन्त्रियोंके साथ आगे गये। महाराज बिम्बसारने बुद्धका शिष्यत्व ग्रहण किया।
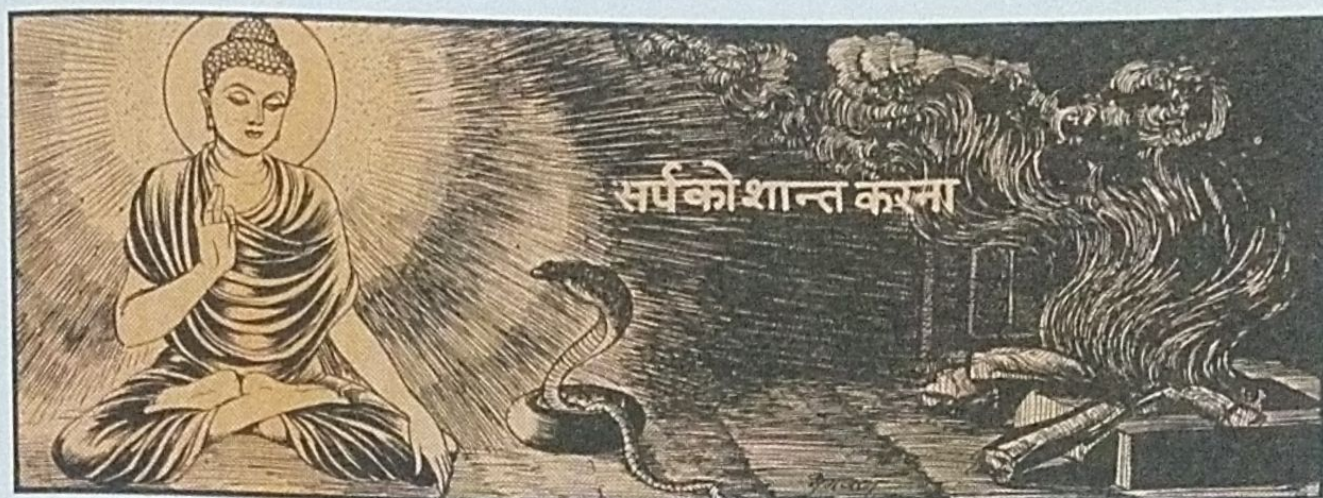
बिल्व-काश्यप-अग्निहोत्र धर। रहता सर्प भयंकर विषधर॥
देख तथागतको भय खाकर। बैठा पात्र उन्हींके जाकर॥

'जलता शिखर अग्निसे जैसे। है सारा जग जलता वैसे॥
राग, द्वेष, मोहादिक लीन।' यह समझाते बुद्ध प्रवीण॥

बिंबसार ये मगध नरेश। आये हैं लेने उपदेश॥
होकर प्रभुके शरणापन्न। होगा जिससे जीवन धन्य॥
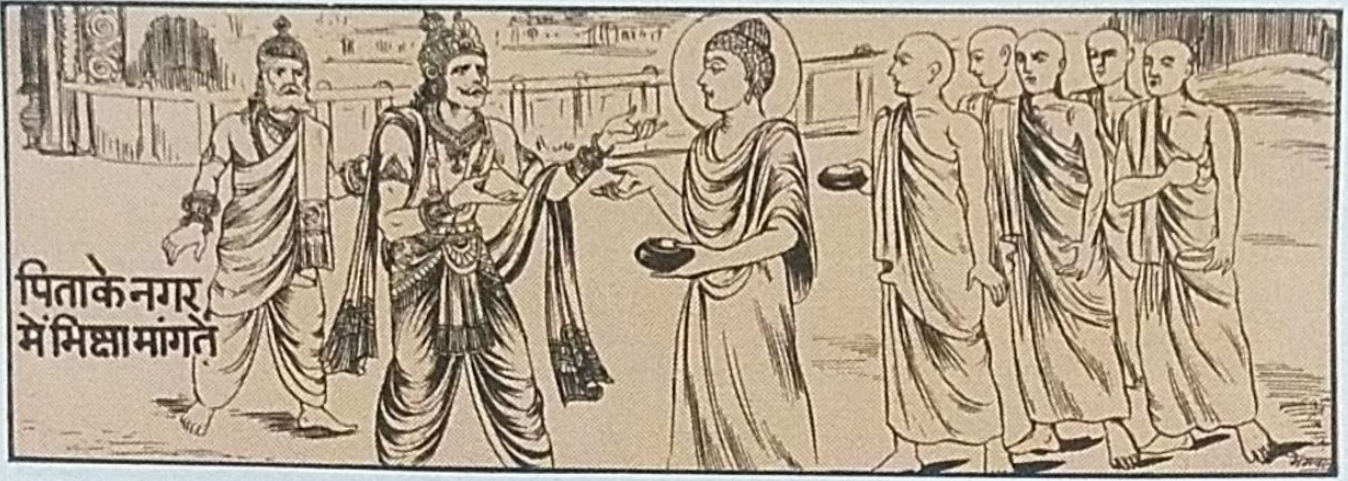
जो था सिंहासन अधिकारी। वही नगरमें भिक्षाचारी॥
रोते कपिलवस्तु-नर-नारी। व्यथा हुई है नृपको भारी॥
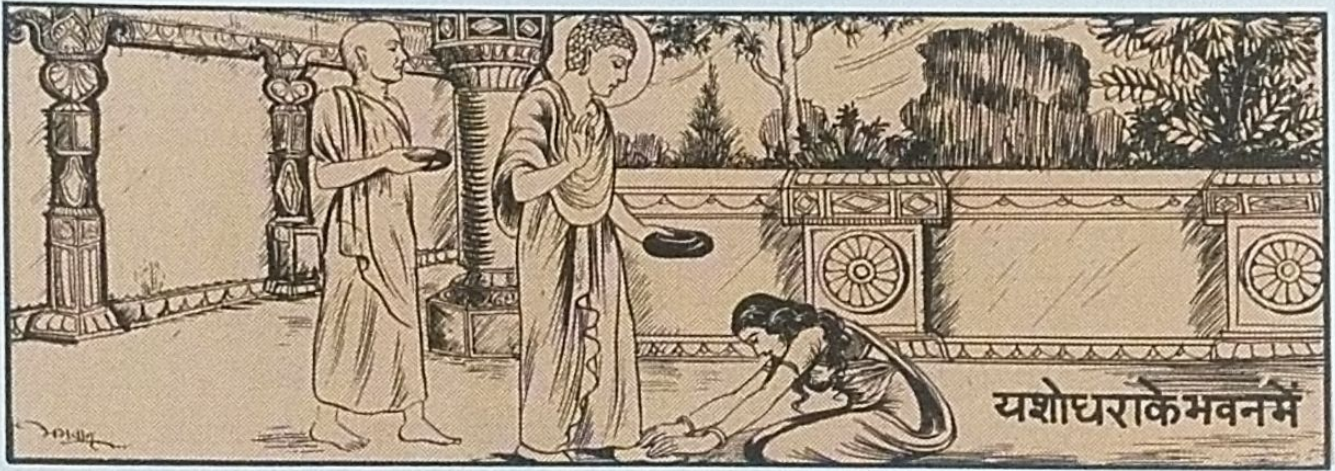
स्वामी भिक्षुक बन गृह आये। यशोधराने दर्शन पाये॥
रहा मानिनीका सम्मान। दिया पुत्र भिक्षामें दान॥
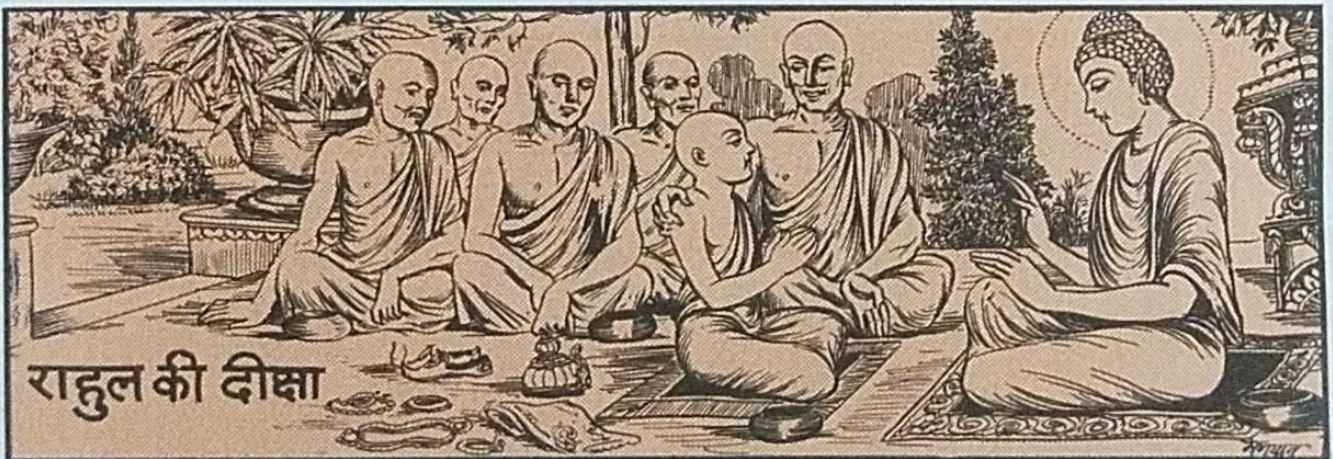
मिला पुत्रको पैतृक दाय। जिससे भव-बाधा मिट जाय॥
बाल-भिक्षु हैं राहुल होते। जग जन मोह विवश ही रोते॥

अनेक स्थानोंपर होते हुए बुद्ध अपने पिताके नगरमें पहुँचे। जब महाराज शुद्धोदनको पता लगा कि उनके पुत्र अपने ही नगरमें भिक्षा माँग रहे हैं तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। वे मन्त्रियोंके साथ गौतमके पास गये। बुद्धने उन्हें त्यागीका धर्म समझाकर आश्वासन दिया।

महाराज शुद्धोदनकी प्रार्थनापर वे भिक्षा करने राजमहल पधारे। पतिव्रता यशोधराके भवनमें जाकर उन्होंने उसे दर्शन दिया। यशोधरा अपने स्वामीके चरणोंमें गिर पड़ी।

फिर यशोधराने अपने पुत्र राहुलको सिखाया कि अपने पिताके पास जाकर पैतृक सम्पत्ति माँगो। बालक राहुल पितासे पैतृक सम्पत्ति माँगने गया। बुद्धने उसे साथ ले लिया। उनकी सम्पत्ति तो त्याग थी। राहुलको लाकर उन्होंने उसे परिव्राजकोंके संघमें सम्मिलित कर लिया।

कुछ लोग द्वेषवश बुद्धका विरोध करने लगे थे। वे कहते थे कि 'गौतममें कोई शक्ति नहीं है।' उनको शान्त करनेके लिये शिष्योंके अनुरोधसे बुद्धने चमत्कार दिखाना स्वीकार किया। उन्होंने एक आम चूसकर गुठली भूमिपर गाड़कर उसपर हाथ धोया। उसी समय गुठलीमें अंकुर निकला और तत्काल बढ़कर वृक्ष बन गया। उसमें फल आ गये। और भी आश्चर्यजनक चमत्कार बुद्धने दिखाये।

एक बार गौतम बुद्ध शिष्योंसे अलग होकर एकान्त वनमें कुछ दिन रहे। वहाँ एक हाथी और एक बंदर उनके लिये फल, पुष्प, जल आदि लाकर उनकी सेवा करते थे।

श्रावस्तीका अंगुलीमाल नामक डाकू एक हजार मनुष्योंको मारकर उनकी अंगुलियोंकी माला बनाना चाहता था। उसने बहुत मनुष्योंको मारा था। जब बुद्ध उधरसे निकले तो वह उन्हें भी मारने दौड़ा। बुद्ध साधारण गतिसे जा रहे थे, किंतु दौड़कर भी डाकू उनके पास पहुँच नहीं पाता था। अन्तमें बुद्धने उपदेश करके उसे पाप-कर्मसे अलग किया।
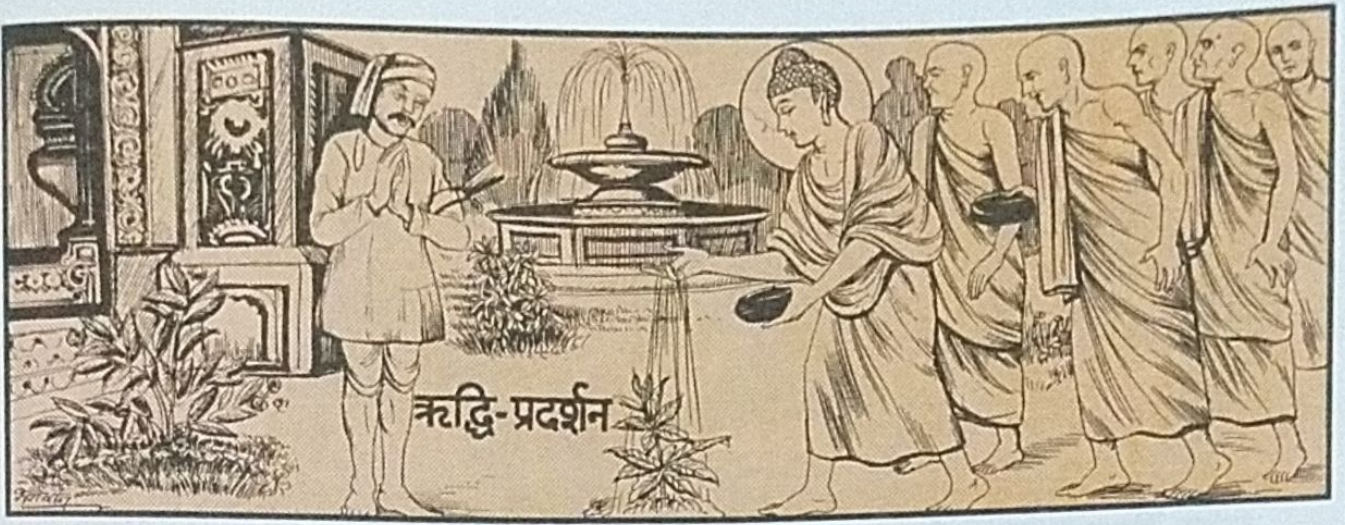
धोया था गुठलीपर हाथ। फूटा अंकुर जलके साथ॥
बढ़ता चला वृक्ष तत्काल। हैं सब चकित देख यह हाल॥
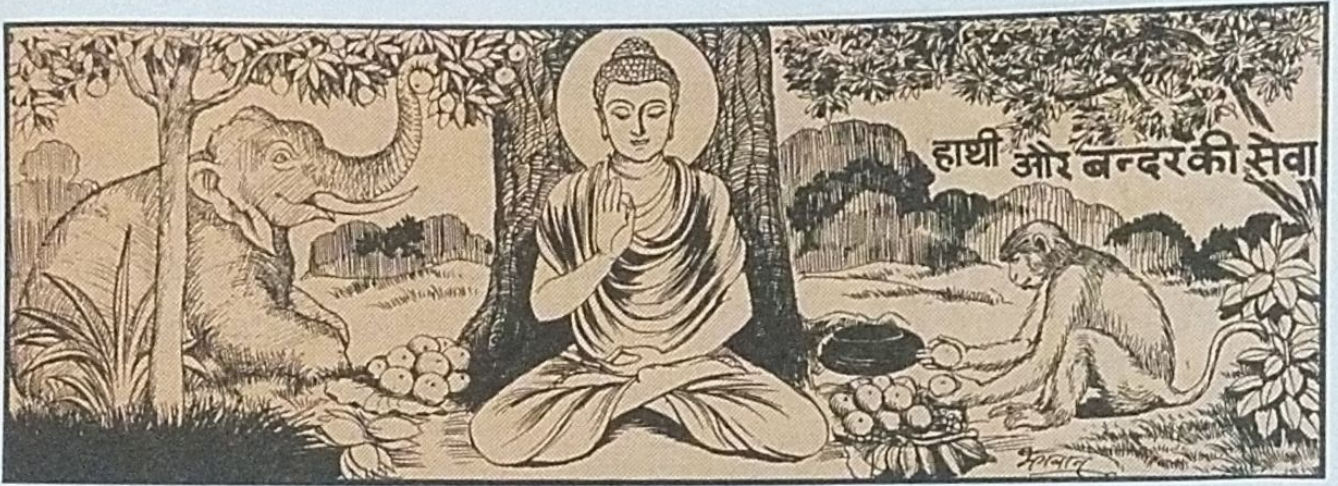
किया बुद्धने वनमें वास। साथ न सेवक, ग्राम न पास॥
बन्दर और यहाँ गज एक। लाते हैं फल-फूल अनेक॥

यह डाकू है 'अंगुलिमाल'। दौड़ रहा लेकर करवाल॥
पकड़ न पाता है बेहाल। जाते बुद्ध मंद मृदु चाल॥

यक्ष भवनमें बैठे बुद्ध। कहाँ भीति जब अन्तर शुद्ध॥
हुआ यक्ष भी आज कृतार्थ। पाकर प्रभुसे ज्ञान यथार्थ॥
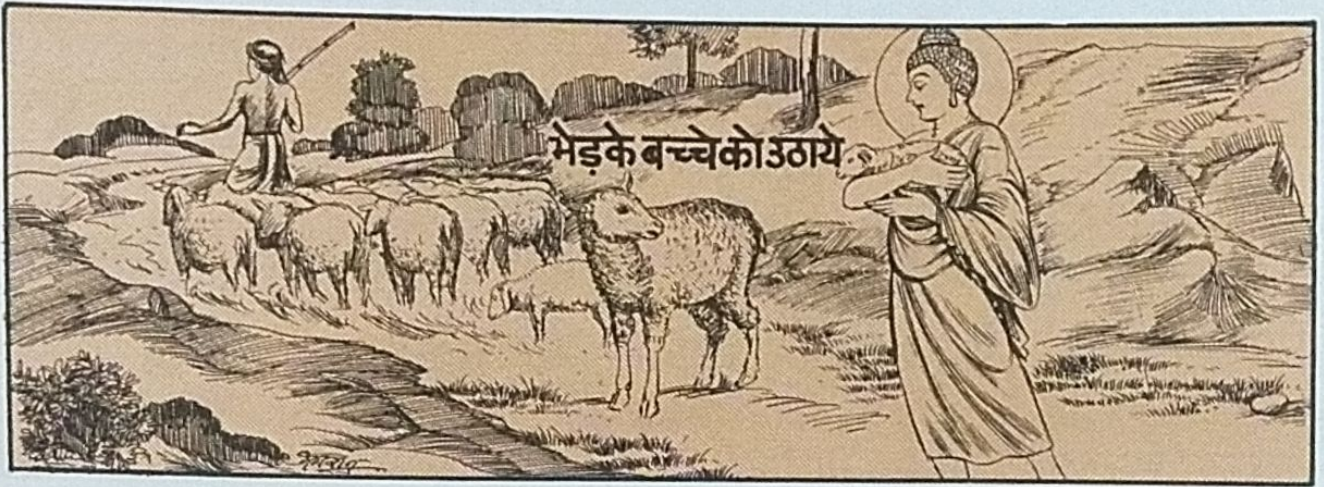
लगी चोट थी पिछले पगमें। लँगड़ाता चलता था मगमें॥
शावक लिया बुद्धने गोद। भेड़ देखती, पाती मोद॥

नीलागिरि गज सुरा पिलाकर। था छोड़ा उन्मत्त बनाकर॥
पर मग बैठा वह प्रभु लखकर। पद-रज लेता सूँड़ बढ़ाकर॥

श्रावस्ती नगरके पास आड़विक ग्राममें एक यक्ष रहता था। उसका निवास एक पीपलके वृक्षमें था। ग्रामवासी उसके आहारके लिये प्रतिदिन एक मनुष्य देते थे। घूमते हुए बुद्ध वहाँ पहुँचे और उसी पीपलके नीचे बैठ गये। यक्षका बुद्धपर कोई जोर नहीं चल सकता था। उलटे बुद्धकी शिक्षासे उसने हिंसा छोड़ दी।

एक बार बुद्धने देखा कि गड़ेरिया भेड़ोंको हाँके लिये जा रहा है। भेड़के एक बच्चेके पैरमें चोट लग गयी है। वह लँगड़ाता हुआ चल रहा था। बार-बार पीछे रह जाता था। उसकी माता बार-बार उसे घूम-घूमकर देखती थी। बुद्धने उस बच्चेको गोदमें उठा लिया और वे भेड़ोंके पीछे-पीछे चलने लगे।

बुद्धसे शत्रुता करनेवालोंमें सबसे प्रधान थे कुमार देवदत्त। उन्होंने राजा अजातशत्रुको उभाड़कर बुद्धको मार डालनेके लिये नीलागिरि नामका मतवाला हाथी छुड़वाया। लेकिन वह हाथी बुद्धके पास पहुँचकर उनके सामने बैठ गया और उनकी चरणधूलि अपने ऊपर डालने लगा।

महाराज प्रसेनजितके कोषाध्यक्षकी पत्नीका नाम था विशाखा। वह बड़ी धर्मपरायणा थी। उसने बुद्धसे यह वरदान माँगा कि वह भिक्षुओंको वस्त्र, अन्न, फल, ओषधि और पथ्यकी व्यवस्था कर सके। उसका दान सदा निःस्वार्थ होता था।

कृशा गौतमी नामकी ब्राह्मणीका पुत्र मर गया। वह पुत्रका मृत-देह लेकर गौतम बुद्धके पास आयी। बुद्धने कहा—'जिस घरमें कोई न मरा हो, उस घरसे एक मुट्ठी सरसों ला दो तो मैं तुम्हारे पुत्रको जिला दूँ।' कृशा गौतमी बहुत घरोंमें भटकती रही। अन्तमें वह स्वयं समझ गयी कि जब सभी घरोंमें मृत्यु होती है, सबको मरना ही है तो उसका पुत्र ही कैसे जी सकता है। शिक्षा देनेका बुद्धका यह अनोखा ढंग था।

वे सभीपर दया करते थे। आम्रपाली नामक गणिकाने उनका आदरपूर्वक निमन्त्रण किया। वे उसके यहाँ भी भिक्षुओंके साथ गये। बुद्धके उपदेशसे गणिका परम श्रद्धालु धर्मनिष्ठ हो गयी, उसने वह आम्रवन, जिसमें बुद्ध ठहरे थे, खरीदकर संघाराम बनानेके लिये दान कर दिया।

'भिक्षुजनोंको कपड़ा-अन्न। पथ्य-दवा जो रोग विपन्न॥
दूँ, पर मुझे न हो अभिमान।' चहे विशाखाने वरदान॥

कृशा गौतमी मृतसुत पावे। यदि उस घरसे सरसों लावे॥
जहाँ न हुआ हो मरण-प्रवेश। किया बुद्धने यों उपदेश॥
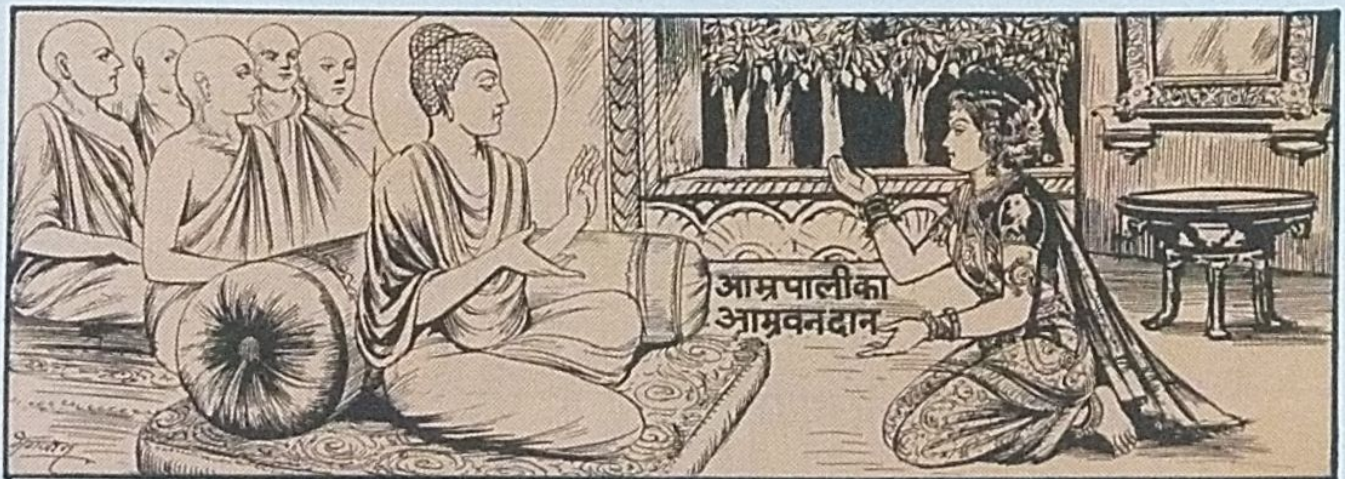
गणिका होकर भी यह धन्य। आम्रपालिका सदृश न अन्य॥
किया तथागतका सत्कार। दिया आम्रवनका उपहार॥
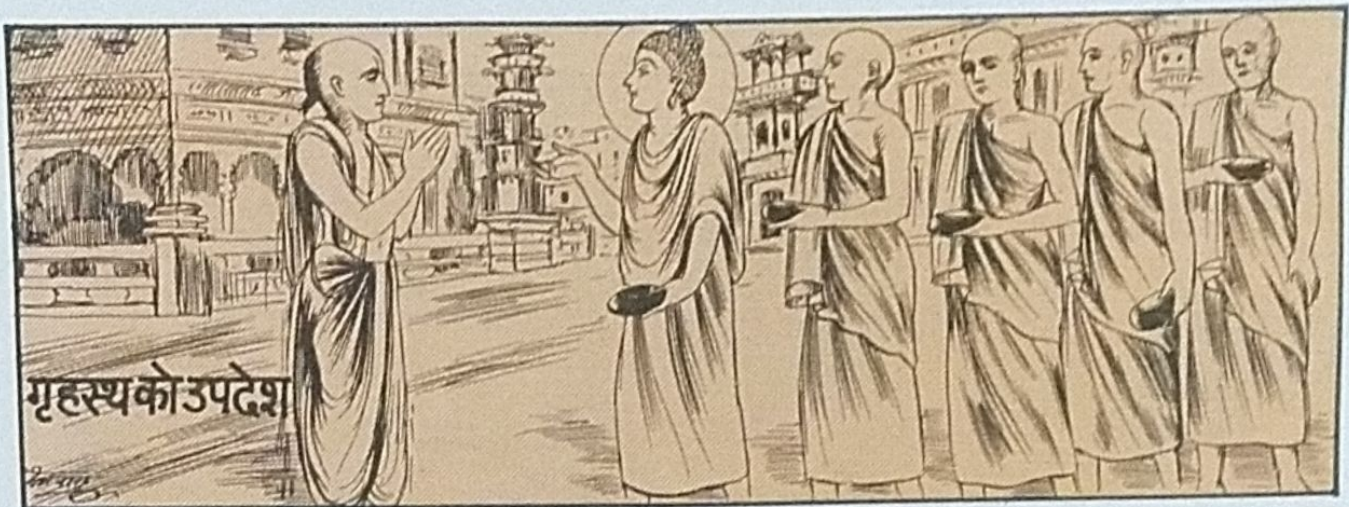
यह गृहपति, श्रद्धालु सिगाल। बन्दन करता है दिक्पाल॥
देख सरल प्रभुके मन भाया। 'आर्य विनय' इसको समझाया॥

'करो न औरोंका अपमान। करो न कुलका तुम अभिमान॥
सदा श्रेष्ठ हैं उत्तम कर्म।' कहा विप्रसे प्रभुने धर्म॥

नृप प्रसेनजित रथसे आये। थे वे लोगोंके भड़काये॥
हुए शान्त सुनकर यह शिक्षा। 'उचित सभीकी धार्मिक दीक्षा॥'

समय-समयपर बुद्ध सभी प्रकारके लोगोंको उनके धर्मका रहस्य समझाते थे। उन्होंने सिगाल नामक वैश्यको चारों दिशाओंको नमस्कार करते देखकर बताया—'हिंसा न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना और परस्त्रीसे सङ्ग न करना—यही चार मुख्य धर्म हैं। चारों दिशाओंको नमस्कार करते हुए यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि किसी दिशामें कहीं ये पाप हम नहीं करेंगे।' और भी उपदेश उसे उन्होंने किये।

इसी प्रकार उन्होंने भरद्वाज नामक ब्राह्मणको सत्कर्मोंका उपदेश करके बताया कि सत्कर्म करनेवाला ही उच्च है, आदरणीय है। जिसमें सत्कर्म नहीं है, उसका ऊँची जातिमें जन्म लेनेका अभिमान झूठा है।

राजा प्रसेनजित भी बुद्धके पास यही कहने आये थे कि भिक्षुलोग चाहे जिसके हाथका जल भी लेते हैं—यह ठीक नहीं है। गौतम बुद्धने उन्हें सझाया कि भिक्षु तो किसी वर्णमें नहीं हैं। उनके लिये चाहे जहाँ जल पी लेना या भोजन कर लेना तो ठीक नहीं; किंतु उनको तो मनुष्यके सदाचार, श्रद्धा और धर्मका ही आदर करना चाहिये।

इस प्रकार भगवान् गौतम बुद्धने अपने उपदेशोंसे सभी वर्गके लोगोंको धर्मका सच्चा मार्ग दिखाया। उन्होंने अन्तिम उपदेश 'चापल्य चैत्य' स्थानमें आनन्द तथा दूसरे भिक्षुओंको किया।

इस उपदेशके बाद जब भिक्षुओंके साथ आनन्द वहाँसे चले गये तो 'मार' देवता आया और उसने प्रार्थना की—'गौतम! आपका कार्य पूरा हो गया। अब आप निर्वाण स्वीकार करें।' तथागतने 'मार'की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

लौटनेपर जब आनन्दको पता लगा कि भगवान्ने जीवनका संकल्प त्याग दिया है और निर्वाण लेनेवाले हैं, तो वे शोकसे व्याकुल हो गये। तथागतने उनको समझाकर शान्त किया।
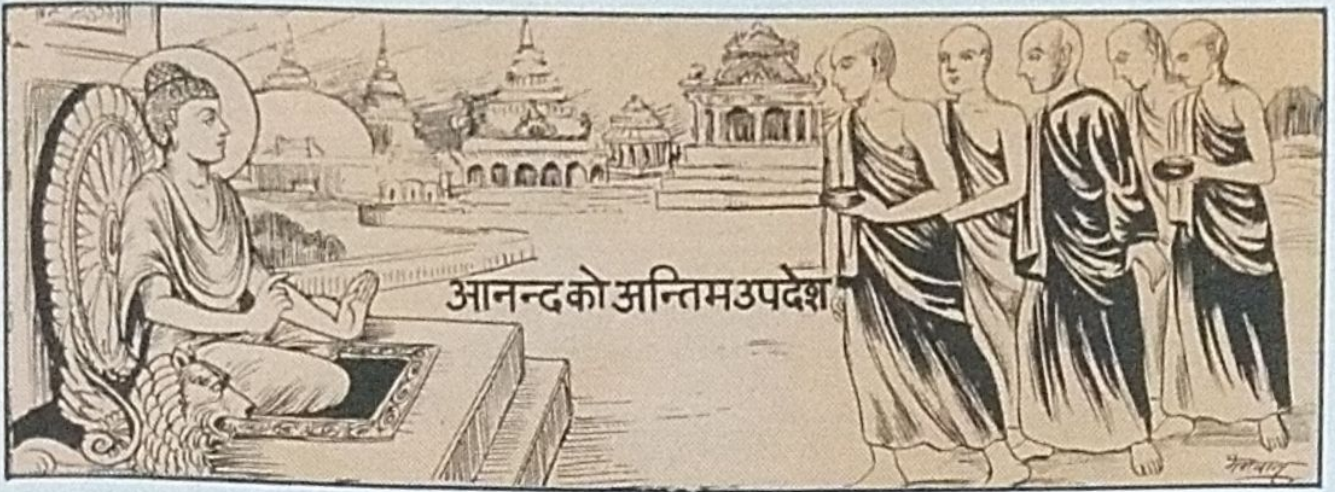
'आत्म-शरण हो आत्म-प्रदीप्त। करो धर्मका दीपक दीप्त॥
करो न आशा औरोंकी तुम।' यही बुद्ध-उपदेश मनोरम॥
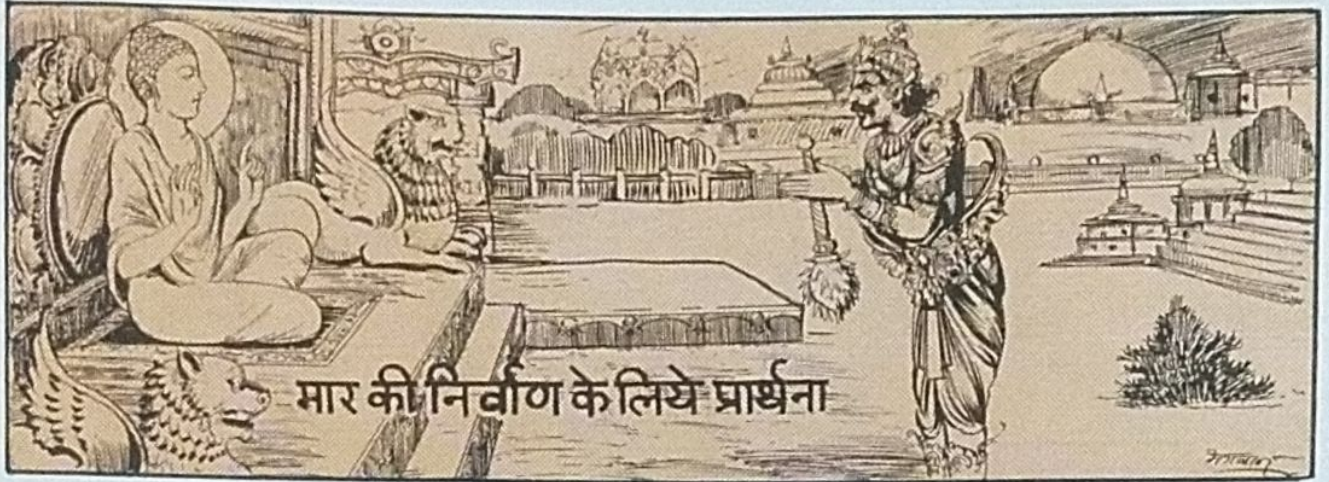
'करें प्राप्त अब 'परिनिर्वाण'। देह सदा सबका म्रियमाण॥
हुआ धर्मका उचित प्रसार।' करता कुटिल प्रार्थना 'मार'॥
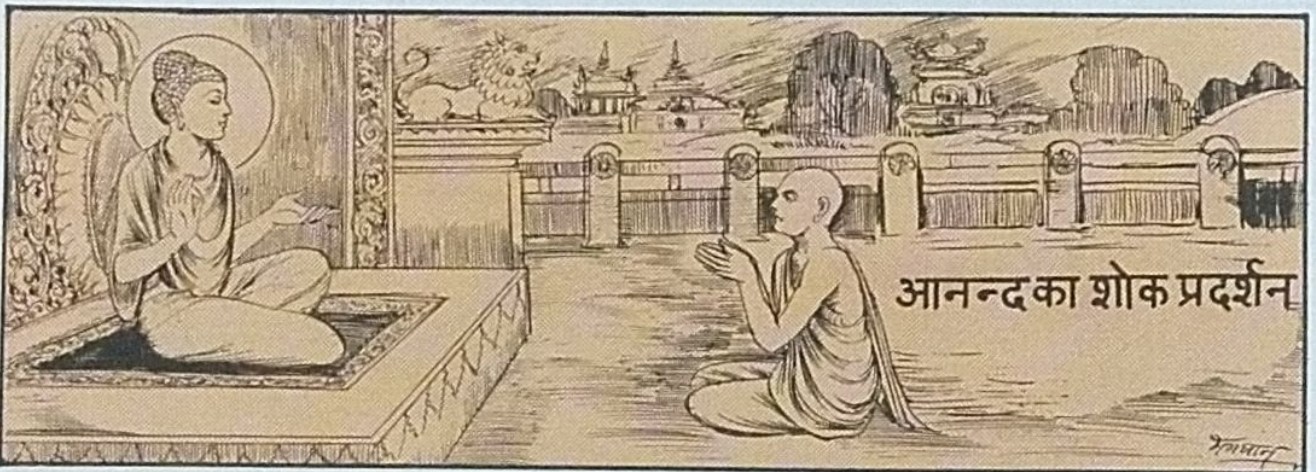
'मार'-प्रार्थना कर स्वीकार। त्याग दिया 'आयु-संस्कार'॥
जान हुए व्याकुल आनंद। जीवन-मरण बुद्ध स्वच्छन्द॥

लगी प्यास, था इच्छित जल। गँदला नीर हुआ निर्मल॥
भरा पात्र लाये आनंद। 'पान करें प्रभु जल सानंद॥'

कुशीनगर वन शाल सघन वर। युगलशाल-तरु-मध्य-शयनकर॥
व्याकुल सब जन ज्यों म्रियमाण। हुआ बुद्धका 'परिनिर्वाण'॥
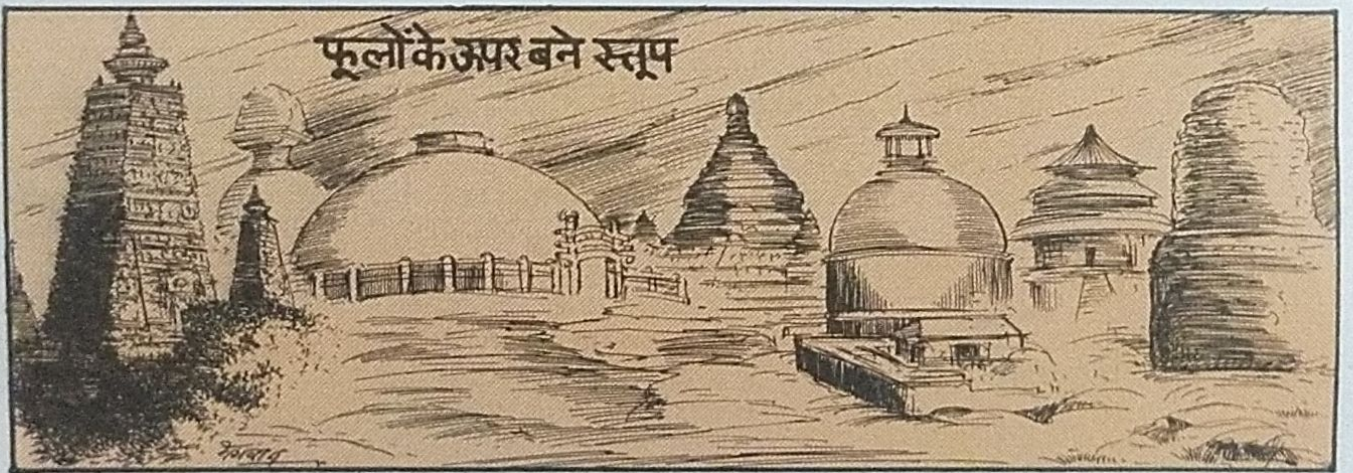
आठ बने वहाँ अस्थि स्तूप। कुंभ स्तूप अंगार स्तूप॥
स्मृति स्तूप दस-गौरवगान। बुद्ध महान! जय बुद्ध महान॥

वहाँसे कुशीनगरमें आकर बुद्धने आनन्दसे जल माँगा। वहाँ एक छोटी नदी थी, जिसमेंसे पाँच सौ गाड़ियाँ उसी समय गयी थीं। इतनेपर भी बुद्धके प्रभावसे उसका जल निर्मल बना रहा। आनन्दने वही जल लाकर बुद्धको पिलाया।

उसके बाद कुशीनगरमें ही मल्लोंके शालवनमें दो शालवृक्षोंके मध्य आनन्दके द्वारा बिछाये हुए चीवर (चद्दर)-पर भगवान् बुद्ध अन्तिम बार लेटे। लेटे-लेटे ही उन्होंने परिनिर्वाण प्राप्त किया।

बुद्धके निर्वाणसे भिक्षु-संघ तथा पूरे देशमें हाहाकार मच गया। अन्तमें बड़ी श्रद्धासे उनके देहका अग्नि-संस्कार हुआ। उनके फूल (अस्थियाँ) देशके आठ स्थानोंपर स्थापित करके उनपर आठ स्तूप बनाये गये। एक स्थानपर वह कुम्भ जिसमें फूल थे और एक स्थानपर चिताके अंगार स्थापित करके उनपर भी स्तूप बने। इस प्रकार कुल दस स्तूप बुद्धके स्मारक बनाये गये।